कबीर ज़िन्दा है

तेवरी संग्रह



संपादक - रमेशराज

Scanned by CamScanner

कबीर जिंदा हैं

(तेवरी संग्रह - २)

संपादक

रमेशराज

सार्थक सृजन प्रकाशन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़-२०२००१

कबीर जिंदा है (तेवरी संग्रह)

●

संपादक—

रमेशराज

●

प्रकाशक—

सार्थक सृजन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़-२०२००१

●

मुद्रक—

पम्मी प्रिन्टर्स

सुदामापुरी, अलीगढ़-२०२००१

●

आवरण

स्वामी प्रेमचन्द्र मौलि

●

मूल्य— सजिल्द - बीस रुपये

पेपरबैक - बारह रुपये

श्रद्धेय क्रांतिकारी
श्री मन्मथनाथ गुप्त को
सादर सप्रेम समर्पित

पृष्ठभूमि

इतिहास गवाह है. कविता का जब भी शोषक जनविरोधी शक्तियों के खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल हुआ है, भाषा में बारूद भरी गयी है तो उससे आदमखोरों के भीतर गुर्राता हुआ भेड़ियापन शब्दों की गोलियों से छलनी होकर सरे–आम दम तोड़ने लगा है।

इतिहास गवाह है, कविता जब–जब भी सामाजिक यथार्थ से कतरा कर चली है, ईश्वर और मोक्ष के बेहूदगी से भरे रास्तों पर आध्यात्म के जंगल में भटकी है या फिर एक अजीब स्वप्न-लोक में विचरी है, तब-तब आम जनता की गर्दन पर पूंजीवादी ढांचे के शोषण की तलवारें भरभरा कर टूटी हैं।

इतिहास गवाह है, इस तथाकथित भारतीय स्वतन्त्रता के पैंतीस–छत्तीस वर्षों में पूंजीवादी शोषक व्यवस्था ने जिस तरह अपनी जड़ें जमायी हैं गलत और भ्रष्ट मूल्यों ने आदमी के चरित्र में जिस तरह घुस पैठकी है धर्म, सुधार, योजना परियोजना के नाम पर पर जिस तरह साजिशियों ने एक धोखे भरा खेल खेला है, सत्ताधारी बहेलियों ने आपातकाल के दौरान जिस तरह अनुशासन, देशहित, कार्यक्रम के सब्जबाग दिखाकर जनतन्त्र की हत्या की है, उस कटुयथार्थ को कविता नेदेखा ही नहीं, भोगा ही नहीं अपने सीने पर तलवार की तरह झेला भीहै यही कारण है कि स्वतन्त्रता के बाद कविता

राहत तुमको ये कल देंगे, बातें झूठी
बिन खाये कुछ चावल देंगे, बातें झूठी;

मीलों पानी नहीं, गगन पे खिले सितारे
सूखे पेड़ कभी फल देंगे, बातें झूठी:

आदम खोरों की बस्ती से अलग कहीं पे
अब रहने को जंगल देंगे, बातें झूठी.

नदी किनारे तड़प रही मछली बेचारी
पानी से भर मरुथल देंगे, बातें झूठी.

सिक्कों से चलते हों जिनके नाते-रिश्ते
साथ तुम्हारे वो चल देंगे, बातें झूठी.

तीन बीघे खेत में इतनी फसल पैदा हुई
चार दाने घर को आये, शेष जाने क्या हुई ?

आप भी आ जाइयेगा कल किसी अखबार में
इसलिए तो आज डटकर आप पर चर्चा हुई.

कल किसी मधुवन में फूलों से लदी होगी कहीं
आज उस टहनी को देखो सूखकर काँटा हुई.

बस जरा हिलते ही लहरें कितनी पैदा हो गयीं ?
आपकी अब जिन्दगी तो झील की नौका हुई.

मानता हूं ये इमारत आपकी मजबूत है
पर बताओ, जो यहाँ पर झोपड़ी थी क्या हुई ?

तीन

बीते कल की आस हमारी मुट्ठी में
कितनी हुई उदास हमारी मुट्ठी में ?

सिर से पैरों तक पैबन्द लगे फिर भी
जिन्दा है इतिहास हमारी मुट्ठी में.

सपने हरियाली अर्पित करते लेकिन
सच में सूखी घास हमारी मुट्ठी में.

फर-फर उड़ती मेज के ऊपर बेकारी
दबीं फाइलें खास हमारी मुट्ठी में.

जाग रहा है घड़ी की सुइयों—सा जीवन
सोया है सन्यास हमारी मुट्ठी में.

आये इतिहास में इंसाफ के अवसर कितने ?
भीष्म—सी साध गये चुप्पियाँ गुरुवर कितने ?

आंकड़े कत्ल के पूछो, मगर पूछो ये भी
रोज बनते हैं मेरे देश में खंजर कितने ?

मैं भटक कर भी नहीं खुद से भटक पाया पर,
रास्ते भूल गये साथ के रहबर कितने ?

हम को मिल जाते हैं हर रोज सड़क पर यारो !
आते जाते हुए सन्नाटे—भरे घर कितने ?

आपसे कहनी हैं बातें तो बहुत—सी लेकिन,
शब्द मर जाते हैं घुट घुट के ही अन्दर कितने ?

आस्मां पर एक तारे से कहा तारों ने कुछ
और समझा इस धरा पर कुछ समझदारों ने कुछ.

नाव खुद पलटी, किसी ने दी पलट, कैसे कहूं ?
जब किनारों ने कहा कुछ, और मझधारों ने कुछ,

हर भिखारी से कटोरे ने कहा, सोचो जरा—
मन ही मन कुछ चाहकर डाला है बेचारों ने कुछ.

मुंह पे ताले जड़ दिए ताली खजाने में जमा
सच कहा है जब से यारो ! चन्द अखबारों ने कुछ.

उम्र भर सबको सुनाता जख्म अपनी दास्तां
कर दिया होता अगर अहसान अंगारों ने कुछ

जहां रिश्तों पे कुछ इल्जाम होगा
नपुंसक भी वहां बदनाम होगा.

अगर छोटा—बड़ा एक दाम होगा
सियासत की फसल का आम होगा.

जो पहरेदार हैं चौखट के बाहर
वफादारों में उनका नाम होगा.

बगावत कह रही मीठे स्वरों में
हमें पत्थर से लेना काम होगा.

वही इतिहास के पन्ने बनेंगे—
लगा जिन पे कोई इल्जाम होगा.

परिवर्तन गोचर होता है यूं घर—घर में
गांव नगर में, नगर आ रहे महानगर में.

शक्ति पराजित हो जाती है मात्र समय से
सिंह खड़ा है बन्दी, बेबस चिड़िया घर में.

चांख रहे हैं शिला—लेख के अक्षर—अक्षर
निष्ठुर भी सहते रहते हैं चोट उदर में.

विजय-पताका भाई तुम कितनी फहरादो
वांछित—फल किसने पाया है बन्धु समर में ?

आशाओं की मरीचिका में भटक—भटक कर
नयनों से आने लगती है प्यास अधर में.

खरबूजे पर छुरी चलाई टुकड़े-टुकड़े
इज्जत अपनी बची—बचाई टुकड़े—टुकड़े.

धरती को तुम बांट चुके अब वहां चांद पर
क्या कर दोगे जाकर भाई टुकड़े—टुकड़े.

लूट लिया करते थे धन—दौलत सब लेकिन
इज्जत भी अब करें कसाई टुकड़े—टुकड़े.

पत्थर हो या कांच, सभी का यही नतीजा
समय ने जब—जब चोट लगाई, टुकड़े—टुकड़े.

फूलों पर जब ओस गिरी तब बोले मोती
सुना हंस ने चोंच बढ़ाई टुकड़े—टुकड़े.

△ सम्पर्क—सिनेमा रोड, हरदोई (उ० प्र०)

खेत जब जब भी लहलहाता है
सेठ का कर्ज याद आता है.

जो भी बनता है पसीने का लहू
तोंद वालों के काम आता है.

जिंदगी आज किसी निर्धन की
ट्रक अभावों का रोंद जाता है.

जो भी आता है मसीहा बनकर
सलीब हमको सोंप जाता है.

आम, आम आदमी है यारो यहां
हर कोई जिसको चूस जाता है।

दो

थे गर्भ में गुलाम की मुद्रा लिये हुए
पैदा हुए प्रणाम की मुद्रा लिये हुए.

आदर्श की जो बात चली, तो खड़े हुए
मंचों पे श्री राम की मुद्रा लिये हुए.

हर बार किया प्रश्न, शराबी निगाह ने
क्यों जी रहे हो जाम की मुद्रा लिये हुए ?

था फिल्मी गीत कंठ में, हिलते रहे मगर
ये होंठ वेद-साम की मुद्रा लिये हुए.

जीवन में कैसे कह दें, आया नहीं प्रभात ?
आया है मगर शाम की मुद्रा लिये हुए.

तीन

जो भी मुखड़े दिखाई देते हैं
उखड़े-उखड़े दिखाई देते हैं.

वृक्ष फूलें कि इससे पहले ही
बाग उजड़े दिखायी देते हैं

मार खा कर महंगाई की सापन
टुकड़े—टुकड़े दिखायी देते हैं.

अब तो लोगों में एक जैसे ही
सबके दुखड़े दिखायी देते हैं.

जब से विकलांग वर्ष निकला है
लोग लंगड़े दिखायी देते हैं.

स्वार्थ की गीता सभी गाने लगे हैं
सभ्यता को बेच कर खाने लगे हैं.

पेट की खातिर धवल परिधान वाले
सच्चाइयों को पीठ दिखलाने लगे हैं.

कलयुगी भगवान ये भग के पुजारी
भोग को अब योग बतलाने लगे हैं.

खाल ओढ़े मेमने की भेड़िये कुछ
आदमी के सामने आने लगे हैं.

चंद सिक्कों के लिये इतिहास वाले
लौह को ही स्वर्ण लिखवाने लगे हैं.

अपने ही सलीबों को उठाये हुए हैं हम
'आजाद' हैं, कई गोलियां खाये हुए हैं हम.

एक शिविर है यातना का माना जिंदगी
फिर भी नहीं कहा कि सताये हुए हैं हम.

आखें उठाके देखलें अब है जरूरी ये
मुद्दत से अपने शीश झुकाये हैं हम.

देखेंगे तमाशा अब कबीरा की तरह कुछ
अपने ही घर में आग लगाये हुए हैं हम

आज यारो इस बद निजाम के खिलाफ
मुद्राएं इन्कलाबी बनाये हुये हैं हम.

आंसुओं से तर-ब-तर काजल मिला है
आज हर दृग में दुखी बादल मिला है.

प्यास ने जब—जब तलाशा नीर मीठा
अंजुरी में यार खारा जल मिला है.

गाँव छोड़ा था शहर का नाम सुनकर
किन्तु आकर शहर में जंगल मिला है.

बात खुशहाली की वे करते रहे
जिंदगी में दुख यहां प्रतिपल मिला है.

हाथ जिससे भी मिलाया है 'गुरु' से
भोगने को बस उसी से छल मिला है.

सात

आदमी से आज किसको प्यार है ?
आदमी होना बहुत दुश्वार है.

मुट्ठियों को भींचता वो स्वप्न में
आँख खुलने पर मगर लाचार है.

दूर तक दिखती नहीं कोई किरन
हर तरफ छाया हुआ अंधियार है.

दो किनारे हैं, मगर वे दूर हैं
सामने मंझधार ही मंझधार है.

भीड़ का चेहरा पढ़ें फुरसत किसे ?
हाथ में सबके लगा अखबार है.

वैसे तो बिच्छुओं की तरह काटते हैं ये
अटकी पे मगर तलुवा तलक चाटते हैं ये.

अंधों से रहा इनका बहुत पास का रिश्ता
चेहरा टटोल कर प्रसाद बांटते हैं ये.

मजबूरियों की कैद में देखा जो किसी को
हर बात पे कानून नियम छांटते हैं ये.

दे के दुहाई धर्म की, मजहब की देखिये
नफरत से आज खाइयों को पाटते हैं ये.

हाथी-सा व्यक्तित्व, मगर व्यर्थ है गुरू
अपनी गली में श्वान—सा रंग गांठते हैं ये.

△ सम्पर्क—गोस्वामी विभूति कार्यालय, होशंगाबाद (म० प्र०)

एक

हमारे पूर्वजों को आपने ओढ़ा बिछाया है
कफन तक नोच डाला, लाश को नंगा लिटाया है.

गली के पागलों ने चौक में जो जनसभा की थी
उसी में आपका चिट्ठा भिखारी ने सुनाया है:

सभी के शीश काटेंगे, कि जितने पाप के होंगे
यही सबने, यही सबने यहां बीड़ा उठाया है.

हमीं ने आपको पाला पसीने की कमाई से
हमारे आप कुत्ते थे, हमीं को काट खाया है.

जमा खोरो ! कुशल चाहो अगर तो ध्यान से सुनलो
निकालो अन्न निर्धन का जहाँ तुमने छुपाया है.

सम्पर्क—हिन्दी विभाग, के० के० जैन म० वि० खतौली

गांव-गांव से खबर मिल रही सुनिये पंचो देकर ध्यान
जनता आज गुलेल हो रही, कविता होने लगी मचान.

नीवों में भारी हलचल है क्या हलचल का करूं बयान
भर-भर, भर-भर गिरें बुर्जियाँ, ढ़हें पाप के सभी मकान.

गली-गली में गिरीं बिजलियां, बस्ती बस्ती में तूफान
नगर-गाँव तक बिलख रहा है, भइया अपना हिन्दुस्तान.

लापरवाही से माली की बदला ऐसा सुनो विधान
कली-कली के, फूल-फूल के हाथ-हाथ में तीर कमान.

'गोबर' कहता है संसद को और नहीं बनना दूकान
परचों पर अब नहीं लगेंगे आंख मूंद कर और निशान.

△ सम्पर्क—हिन्दी विभाग, के० के० जैन म० वि०, खतौली

अपनों पर ही वार लोग अब करते हैं
कैसे अत्याचार लोग अब करते हैं.

नकली औषधि पर है असली का लेबल
जीवन का व्यापार लोग अब करते हैं.

पावन रिश्तों पर भी गहरे धब्बे हैं
कुछ ऐसा व्यभिचार लोग अब करते हैं.

मानव से तो घृणा द्वेष ये रखते हैं
बस कुत्तों से प्यार लोग अब करते हैं.

शाकाहारी होने का तो नाटक है
केवल रक्ताहार लोग अब करते हैं.

△ सम्पर्क—पो० बो० ६०, पानीपत–१३२१०३

बसते इस नगरी में कैसे-कैसे ये दीवाने लोग ?
पल-भर में अपने बन जाते, पल-भर में बेगाने लोग,

नम आँखें हैं, सूखे चेहरे, पेट भूख से अनुबंधित
फिर भी है मुस्कान अधर पर, ये कैसे मस्ताने लोग ?

बदले चेहरे और मुखौटे, आवाज़ों के मेले में
वादों की सौगात लिये कुछ आ जाते भरमाने लोग.

चाँद सितारे, नग़मे घुंघरू, पायल, झांझर, खुशबू, झील
कैसे-कैसे बुनते सपने, अब तो ये दीवाने लोग ?

आंगन अम्बर, एक खुलापन, मिला कहां बोलो इनको
केवल तय करते रहते हैं, जीवन भर तहखाने लोग ?

△ सम्पर्क—कुतुबुद्दीन लेन. दरियापुर, पटना

श्याम बिहारी 'श्यामल' — एक

आँख आँख में लाल ख्वाब चाहिए
हिन्द को फिर इन्क्लाब चाहिए.

आओ इतिहास अब खून से लिखें
परचम को लाल आदाब चाहिए:

ये चट्टानें सख्त होनी हैं आज
थोड़ा और तेज इन्हें दाब चाहिए.

सूखती ही जा रही है और नदी और.
इसमें भी आज सैलाब चाहिए.

भूख ने जिसे मृत प्राय: कर दिया
ऐसी जिन्दगानी को शबाब चाहिए.

△ सम्पर्क—द्वारिकापुरी, नावाटोली, डाल्टनगंज

आप इतना भी नहीं जानते, हद है
गिरगिट भी आज देश में आदमकद है.

भेड़िये सब खाल ओढ़े भेड़ की अब
है परखना कौन अच्छा, कौन बद है ?

पूछिए मत पी गये जो लहू इन्सान का
उनकी आँखों में भला ये कैसा मद है ?

इसलिए बैठा हुआ है सर झुकाये भीम
साथ दुर्योधन के उसका आज पद है

जिसको प्रमाणित किया है हादसों ने
जिन्दगी की पास उसके भी सनद है.

सम्पर्क—।। सी/१-१४१, बोकारो स्टील सिटी

अब खुले नभ के तले रहने का ख्वाब है
तैयार सवालों का तेरे यूं जवाब है.

रात के हर खौफ से उन्मुक्त रहने के लिये
नजरें तलाशने लगीं अब आफताब है.

इस जिंदगी को आग बनाना है हर तरह
हर दर्द पर अब क्रान्ति की लिखनी किताब है.

हर साँस पर गुलामियत का बोझ लद गया
पाया आजादी का ये कैसा खिताब है.

इस तरह मुस्काये हैं हम हर मुसीबत में
काँटों के बीच जिस तरह कोई गुलाब है.

△ सम्पर्क—डी एन ६, आर एन III (के),
ज्वाला फ्लेट्स, डिहरी आन सान

हर आदमी आज परेशान है भाई !
हादसों के गाँव का मेहमान है भाई !

आयेंगी बहारें कभी उम्मीद क्यों रखें ?
जब शाख-शाख बाग की बे-जान है भाई !

कीजिए मत आप यहां प्यार की बातें
डूबा हुआ नफरत में हर इन्सान है भाई !

वो आदमी जो आदमी को बांट गया है.
उस आदमी का आज भी सम्मान है भाई !

महलों में दौर चल रहे अमृत के आज कल
कर रहा निर्धन मगर विषपान है भाई !

△ सम्पर्क—सुता पट्टी, बैंक रोड, मुजफ्फरपुर

विक्रम सोनी

बिक रहा है आज कल ईमान भी
जिंदगी का हर हंसीं मृदुगान भी.

साम्प्रदायिक गीता और बायबिल
पनपा रही है भेद अब कुरान भी.

व्यभिचारिणी हो गयी हर पद्मिनी
जूठी हुई चित्तौड़ की हर शान भी.

आदमी की बात यारो छोड़िए
डस रहे है आजकल इन्सान भी.

ये निजाम मुद्दतों से गूंगा था
आज बहरे हो गये हैं कान भी.

दो

देश को सलूक की जरूरत है
एक जागरूक की जरूरत है.

हंस के मुफलिस को लगाले जो गले
ऐसे माशूक की जरूरत है.

ये व्यस्वस्था है गूंगी कोयल
इसको अब कूक की जरूरत है

दीप अनुबधित हैं अंधेरों से
इनको अब फूंक की जरूरत है.

राजनीति देश की खूंख्वार हुई
आज बन्दूक की जरूरत है.

△ सम्पर्क—आई-१६६, रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर

दर्द जब तक अगन नहीं बनता
जिंदगी का चमन नहीं बनता.

मुद्दतों तक पसीना बहता है
एक दिन में वतन नहीं बनता,

तीर गोली के बद सलीकों से
यूं अदीबो-अमन नहीं बनता.

जब तलक जिंदगी न करवट ले
कोई उम्दा सुखन नहीं बनता.

खून बे-शक खरीद ले दौलत
दौलतों से जेहन नहीं बनता.

इक बवंडर-सा उठने वाला है
वो जहां हर जुबां पे ताला है.

फासला तंग होता जाता है
मौत को जितना-जितना टाला है.

ये जमीं दूर तक धड़कती है
एक कतरा भी जब उबाला है.

इस शहर में अजीब तड़पन है
किसने इन्सां को मार डाला है ?

कब बंधी बेड़ियों से आजादी ?
ये सलीका तो देखा भाला है.

△ सम्पर्क– काठ मंडी, सिरसा—१२५०५५

सब ही आदमखोर यहाँ हैं
डाकू, तस्कर, चोर यहाँ हैं।

खुशियां तो, बनवासिन सारी
केवल गम की भोर यहां है.

अबलाओं की, लुटती इज्जत
पाप बढ़ा घनघोर यहाँ है.

भूखी तड़प रही है जनता
महंगाई का जोर यहां है.

अब तो चांद हो गयी कुर्सी
नेता हुआ चकोर यहाँ है.

दो

ज़ुल्म की दीवार ढाना चाहता हूँ
इक नया संसार लाना चाहता हूँ.

छीन लीं जिसने हमारी रोटियाँ
अब उसे भूखा सुलाना चाहता हूँ.

सांस भी लेना यहाँ मुश्किल हुआ
इस व्यवस्था को हटाना चाहता हूँ.

हर किसी की मुट्ठियाँ तनने लगें
आग मैं ऐसी लगाना चाहता हूँ.

क्रान्ति हो, विद्रोह हो, विद्रोह हो
गीत ऐसे आज गाना चाहता हूँ.

△ सम्पर्क—नोरंगाबाद, अलीगढ़ ।

बस्ती-बस्ती. नगरी-नगरी गूँज रही यह बोली
अब न खेल पायेगा कोई, यहां खून की होली.

बन्द करो, हाँ बहुत हो चुका आजादी का नाटक
जाग रही है, जाग रही है अब तो जनता भोली.

या तो तौर तरीके बदलो अपने मेरे भाई
वर्ना राजमहल को एक दिन खा जायेगी खोली.

चाहें जितना संगीनों से दे लो भाई पहरा
नहीं रुकेगी बन्दूकों से दीवानों की टोली.

अब इतिहास रचा जायेगा फुटपाथों की खातिर
खुशियों से भरनी है हमको अब जनता की झोली.

कुर्सियों पर पल रहे हैं नाग प्यारे
वक्त की आवाज सुन तू जाग प्यारे.

लूटने पर जो तुला है आबरू
गोलियां सीने में उसके दाग प्यारे

सामना कर दुश्मनों का तान सीना
इस तरह कतरा के मत तू भाग प्यारे.

बर्फ़ की मानिंद पहले था कभी
आदमी अब हो रहा है आग प्यारे.

हर जेहन हो जाये जिससे अग्निमय
छेड़ ऐसे आज तू कुछ राग प्यारे.

जगदीश श्रीवास्तव

एक

सारी उमर हुई चपरासी, चुप बैठा है गंगाराम
चेहरे पर छा गई उदासी, चुप बैठा है गंगाराम.

टुकड़े-टुकड़े मन का कागज, किसको आज दिखाये वो ?
न्यायालय में लगती फाँसी, चुप बैठा है गंगाराम.

टोपी जिसकी रही उछलती, टुकड़े जिसे नसीब नहीं
दुनिया उड़ा रही है हाँसी, चुप बैठा है गंगाराम.

आजादी का मतलब केवल, हाथ जोड़कर खड़े रहो
धोखा देते रहे सियासी, चुप बैठा है गंगाराम.

संपर्क—गुप्तेश्वर मन्दिर के सामने, अन्दर किला, विदिशा

कृष्णावतार करुण

आजकल है हर किसी को प्यार झूठों से
चल रहा है आज का संसार झूठों से.

पाँच सालों तक दिलासा वो रहे देते
मानते तौबा सभी हर बार झूठों से.

क्या कहें, किससे कहें, कैसे कहें साथी ?
चल रही है आज ये सरकार झूठों से.

मयकदों में पड़े हैं गाँव के मालिक
हो गया बरबाद हर घरबार झूठों से.

△ संपर्क—मु० सेवाराम, नजीबाबाद, बिजनौर.

शिवकुमार थदानी

एक

तन खूं से लथपथ है लोगो!
चीखों की दस्तक है लोगो!

डगर-डगर, हर रस्ते में अब
खुद से ही दहशत है लोगो!

हर दिन में अब कई मर्तबा
मरने की आदत है लोगो.

दंगा, कर्फ्यू, गस्त, सन्नाटा
शहर-शहर आहत है लोगो!

△ संपर्क · रामबाग, मुजफ्फरपुर-२

निशांत

जिधर भी बढ़ाना चाहा कदम उधर ही दीवार निकली
जो भी नब्ज टटोली इस मुल्क की वो बीमार निकली

बुजुर्ग देते हैं परम्परा के हक में दलीलें यूँ
इस देश की जवानी भी साली गद्दार निकली.

जंग लगे हैं सच औ ईमान के औजार सब
झूठ औ फरेब की तलवार धारदार निकली.

△ संपर्क—द्वारा डी० राज पेंटर, पीली बंगा-६३५=०३

देश यहाँ के सम्राटों ने लूट लिया
सत्ताधारी कुछ भाटों ने लूट लिया.

जनपथ आया था खरीदने सुख लेकिन
उसे राजपथ की हाटों ने लूट लिया

जब-जब मंझधारों से कोई नाव बची
तबतब उसको इन घाटों ने लूट लिया.

नींदों में था उस मजूर के एक सपना
लालाजी के खर्राटों ने लूट लिया.

न्याय-तुला तक पहुंच हुआ खुश होरीराम
मगर उसे नक़ली बाटों ने लूट लिया.

भ्रष्ट हुई सरकार, आंकड़े बोल रहे
जरा पढ़ो अखबार, आंकड़े बोल रहे.

आज देश की सांस-सांस पर कर्ज का
लदा विदेशी भार, आंकड़े बोल रहे.

हर गर्दन पर मंहगाई की, शोषण की
लटक रही तलवार, आंकड़े बोल रहे.

गाँव-गाँव में, हर नगरी में धर्म हुआ
अब चाकू की धार, आँकड़े बोल रहे.

नहीं दिखाई पड़ता कोई अपराधी
होता लेकिन वार, आँकड़े बोल रहे.

ये कैसी खुशहाली मेरे देश में
हर सू है कंगाली मेरे देश में.

मुल्क हुआ निर्जीव यहाँ जबसे सत्ता
गिद्धों ने हथियाली मेरे देश में.

ऊपर से दिखती ये जनता भली-भली
है अन्दर से खाली मेरे देश में.

मंचों पर देते भाषण अब गूंगे
बहरे पीटें ताली मेरे देश में.

अंधकार का साम्राज्य है गली-गली
ये कैसी दीवाली मेरे देश में ?

चार

व्यक्ति पूजा अब यहाँ व्यापार होती जा रही है
इसलिए इन्सानियत बेकार होती जा रही है.

स्वार्थ के इस दौर में मुस्कराती ये सदी
आजकल दुःख -दर्द का भंडार होती जा रही है

अब सजाते हैं इसे तस्कर डकैत देखिए
राजनीति खून का श्रंगार होती जा रही है

लूट कर खाते हैं वे अब देश की हर योजना
उनकी खातिर हर प्रगति आहार होती जा रहीहै

इस तरह की आ गई हैं मुल्क में खुशहालियां
आज रोटी पेट पर तलवार होती जा रही है

पांच

जब से सत्ता लगी सफाई अभियानों में
और गन्दगी बढ़ी सफाई अभियानों में.

हर कोटे को साफ कर गये जनसेवक जी
सारी चीनी गई सफाई अभियानों में.

फर्जी मुठभेड़ों में मारा निर्दोषों को
पुलिस इस तरह रही सफाई अभियानों में.

पहुंच गयी हर एक योजना अब घूरे पर
ऐसी चर्चा खुली सफाई अभियानों में.

शहर-शहर में हुई भ्रूण की यूं हत्याएं
नन्हीं जानें गयीं सफाई अभियानों में.

दौलत अब ईमान हो गयी
इन्साँ को पहचान हो गयी.

होरी को थाने का डर है
झुनियाँ आज जवान हो गयी.

हर इन्साँ की आज जिन्दगी
एक चींटी की जान हो गयी.

अब चर्चा है घर-घर द्वारे
एक कुर्सी भगवान हो गयी.

आज सलीबों पर है हँसिका
ईसा की सन्तान हो गयी.

△ संपर्क—टीकाराम बिल्डिंग, आगरा रोड, अलीगढ़

सुरेश त्रस्त

एक

हाथ जोड़कर महाजनों के पास खड़ा है होरीराम
ऋण की अपने मन में लेकर आस खड़ा है होरीराम.

याचक भाव लिये मुख पर, आँखों में आँसू का दरिया,
मुखिया जी का जैसे होकर दास खड़ा है होरीराम.

शोषण, दमन, भूख, उत्पीड़ा, बदहाली, कंगाली का.
कब से नाजाने बनकर इतिहास खड़ा है होरीराम.

आज नहीं तो कल विरोध हर अत्याचारी का होगा,
अब तो मन में बांधे यह विश्वास खड़ा है होरीराम.

गाय, बैल, झुनियां, धनियाँ, गोबर के मीठे सपनों की,
अपने हाथों में थामे इक लाश खड़ा है होरीराम.

दो

रिश्वत चलती अच्छी खासी, खुलकर आज अदालत में.
सच्चे को लग जाती फांसी, खुलकर आज अदालत में.

अफसर की तो बात छोड़िये, खेल रहा है लाखों में
साहब का अदना चपरासी, खुलकर आज अदालत में.

पकवानों से भरी हुई है तोंद न्यायकर्ताओं की
जनता भटके भूखी प्यासी, खुलकर आज अदालत में.

जन-जन के मीठे सपनों की हत्यायें करने के बाद
छूट रहा बेदाग सियासी, खुलकर आज अदालत में.

गलत दलीलों और फैसलों की धन दौलत के बल पर
गायी जाती बारहमासी, खुलकर आज अदालत में.

तीन

आदमी रह रहा मुखौटों में.
सत्य को कह रहा मुखौटों में.

होंट पर है हंसी, मगर अब तो
त्रासदी सह रहा मुखौटों में.

हर खुशी आ गयी दिखावे में
दर्द पर बह रहा मुखौटों में.

अपना जिसको समझ बैठे हम
प्यार को दह रहा मुखौटों में.

आदमी कल जरूर सोचेगा
क्यूं बेवजह रहा मुखौटों में. ?

जिंदगी पर भार-सी है जिंदगी
आजकल बीमार-सा है जिंदगी.

जल रही है आज औरों के लिए
देखिये सिगार-सी है जिंदगी.

एक चुटकी प्यार को तरसा किये
किस कदर लाचार - सी है जिंदगी?

हम पढ़ेंगे अब इसे खत की तरह
एक पत्राचार - सी है जिंदगी.

हँसते हुए चेहरे यहाँ पर 'त्रस्त' हैं
आँसुओं की धार - सी है जिंदगी.

जन जीवन अब अस्त - व्यस्त है
थका हुआ - सा बड़ा पस्त है.

कुर्सी से जाकर जो चिपका
वह अपने में बहुत मस्त है.

उसका मजहब खून खराबा
वह चाकू में सिद्धहस्त है.

ग्रहण लगे हैं सपने अपने
आशाओं का चाँद ग्रस्त है.

यह कैसी पहरेदारी है ?
कहीं डकैती, कहीं गश्त है ?

दुःख - दर्दों से नाते अपने
इसीलिए तो 'त्रस्त' त्रस्त है.

दर्द भरी हर शाम यहां है
अब बेजार अबाम यहां है.

पड़ते रोज देखिये डांके
बहरा मगर निजाम यहाँ है.

नौकरशाहों की तूती है
बशर परेशां आम यहां है.

गाजर - मूली हुई जिंदगी
हरसू कत्ले-आम यहां है.

भूखा - नंगा मानव देखो
उसको कब आराम यहां है.

बहुत मसीहा देखे हमने
हर कोई बदनाम यहां है.

'त्रस्त' हुआ है देखो बागी
अब तो यह इल्जाम यहां है.

△ ४६, आ. वि. कालोनी सासनीगेट, अलीगढ़

बस्ती-बस्ती मिल रहे, अब भिन्नाये लोग.
सीने में आक्रोश की, आग छुपाये लोग.

जब से सत्ता हो गयी खूनी आदम खोर
हथियारों को चल रहे हाथ उठाये लोग.

नारों वादों से यहाँ अब न छलेंगे और
खुशहाली के नाम पर घाव बसाये लोग.

मंदिर-मस्जिद में मिले, हर नगरी, हर गाँव
धर्म, न्याय, भगवान से, चोटें खाये लोग.

क्रान्ति और विद्रोह की भड़क उठेगी आग
अब तो हैं इस बात की आस लगाये लोग.

दो

रोजी - रोटी दे हमें या तो ये सरकार
वर्ना हम हो जायेंगे गुस्सैले, खूंखार.

फिर से अपने देश में ऐसे हैं हालात
खिचनी है अब म्यान से, राणा की तलवार.

और त्रासदी भूख की, अब न सहेंगे लोग
बस्ती - बस्ती हो रहा, सर पर खून सवार.

मुट्ठी - मुट्ठी तन रही नगर - नगर औ गांव
लोग कर रहे क्रान्ति का, अब स्वागत-सत्कार,

हर जुल्मी के हाथों को, देंगे आज मरोड़
बहुत सहे, चुप ही रहे, हमने अत्याचार.

हर एक तन पर पड़ रही, मंहगाई की मार
बस्ती बस्ती लोग अब रोटी को लाचार.

रोज अदालत में खड़ा रोता होरीराम
दाना दाना खेत का लूटे साहूकार.

आज दवा के नाम पर विष देते हैं लोग
अन्तिम सांसें गिन रहा देश हुआ बीमार

नेताओं में बढ़ रही यूं कुर्सी की भूख
देह देह को नोचती रहती हर सरकार.

कितनी जर्जर हो गयी ये जनतंत्री नाव
कहीं डुबो ना दे इसे मांझी है गद्दार.

झूठों का होने लगा गली-गली सम्मान
होता भइया आजकल, हर सच्चा अपमान.

दफ्तर-दफ्तर हो गये राजाशाही ठाठ
हर कुर्सी पर पुज रहा, अब तो बेईमान.

जिनकी फितरत में रही साजिश, लूट-खसोट
वे यारो इस दौर के बन बैठे भगवान.

अब जीवन की दौड़ में, पिछड़ गये वे लोग
जिनमें बाकी है कहीं थोड़ा भी ईमान.

जब से निर्मित हो गये कुछ सरकारी बांध
बिन पानी के जल रहे खेत और इन्सान.

पांच

युग युग से इस देश का घायल है इतिहास
रहा परकटा होंट पर हास और परिहास.

मंदिर मंदिर पुज रहा, दानव, चोर, डकैत
और पुजारी आज तक भोग रहा बनवास

छीन लिया शैतान ने, सब के मन का चैन
भूख गरीबी, त्रासदी, केवल अपने पास.

सच कहने पर पी रहा विष अब भी सुकरात
और भोगता द्रोण का एकलव्य संत्रास.

झिंगुरी, दातादीन के होते अत्याचार
सब कुछ चुप चुप सह रहा होरी बनकर दास.

बातें करना कपट की, अब तुम छोड़ो यार
प्यार और सद्भाव से, हर मन जोड़ो यार.

टहनी है ये नेह की, हैं रिश्तों के फूल
प्यार जताकर अब इसे, यूं मत तोड़ो यार.

इस मटके में आजकल, खूब भरे हैं पाप
लाओ जरा गुलेल तुम, इसको फोड़ो यार.

हो जायेगी उर्वरा, मन की ख़ुश्क जमीन
प्रेम-नीर से सींचकर, इसको गोड़ो यार.

रक्त सने नाख़ून हैं इसके चारों ओर
इस निजाम के हाथ को, आज मरोड़ो यार.

देख लो क्या हो गया है हाल अब सरकार का?
वोट से रिश्ता जुड़ा है तोड़ रिश्ता प्यार का.

देश की पतवार छोड़े खे रहे हैं नाव जो
कह रहे हैं आज हमको ध्यान है मंझधार का.

भेड़िए अब पी रहे हैं सब गरीबों का लहू
लाभ पूरा ले रहे हैं आज वे अधिकार का.

अब नहीं महफूज कोई घर यहाँ पर दोस्तो
लूटना हक हो गया है आज पहरेदार का.

जुल्म इतने ढ़ा गया है देखिये विकलांग वर्ष
घाव ज्यों का त्यों हरा है लाठियों की मार का.

इस तरह से लद गया है कर्ज से हर आदमी
ब्याज जीवन भर चुकाता सेठ-साहूकार का.

किस तरह की हो रही हैं साजिशें इस देश में
कल यहां पकड़ा गया है एक ट्रक तलवार का.

चंद खाकी वर्दियां और, टोपियाँ इस देश की
क्या करेगी सामना इस तेवरी के वार का.

देश हुआ बरबाद आजकल
पनपा घोर विषाद आजकल.

चोर-सिपाही भाई भाई
कौन सुने फरियाद आजकल?

पूंजीवाद प्रगति पर यारो !
ये कैसा जनवाद आजकल ?

'वीरभगत', 'बिरमल', सुभाष से'
नहीं रहे आजाद आजकल ?

लाओ क्रान्ति अरे सत्ता की
खूनी है बुनियादी आजकल.

तीन

सच है कि आजकल यूं रहने लगे हैं लोग.
चुपचाप हर जुल्मो-सितम सहने लगे हैं लोग.

झूठ से जब से जुड़े इन के गहन सम्बन्ध
अपने सच-ईमान को दहने लगे हैं लोग.

दर्दो-गम की जिन्दगी में क्या हुई बरसात ?
कच्ची किसी दीवार से ढहने लगे हैं लोग.

हर किसी में तैरती है नाव पापों की
एक गंगा-से हुए रहने लगे हैं लोग.

हो न हो अब क्रान्ति की फूटेगी ज्वाला देखना
मैं सुन रहा हूं आजकल कहने लगे हैं लोग.

चार

सड़कों या चौराहों पर जब चीर-हरण होता है
किसी द्रोपदी का हमको तब स्मरण होता है.

चाहे ये इतिहास उठायें या फिर कोई और
महापुरुष के हाथों छलता हुआ कर्ण होता है.

ऐसी मादकता जीवन में कभी नहीं आयी
जैसे लोक-गीत का कोई प्रथम चरण होता है.

भीतर-भीतर कितना काला है ये मत पूछो ?
दिखने में यूं तो हर नेता श्वेत वर्ण होता है.

उस स्थिति में जाने कैसे लोग जिये होंगे
जिस स्थिति में शुरू हमारा रोज मरण होता है.

लोग हैवान हुए दंगों में
हिन्दू मुसलमान हुए दंगों में.

धर्म चाकू-सा पड़ा लोगों पर
कत्ल इन्सान हुए दंगों में.

कोठी बंगले सफेदपोशों के
भेड़िया - धंसान हुए दंगों में.

गुंडे मूँछ तान चले सड़कों पर
ऐसे अभय-दान हुए दंगों में.

देख लो यारो मन्दिर-मस्जिद
बारूदी-खान हुए दंगों में.

दो

जिंदगी भर जहर पिया हमने
पल - पल दर्द को जिया हमने.

जिनके चेहरों पे मुखौटे थे कई
कह दिया उनको शुक्रिया हमने.

गीत जिसमें न आग हो, न लपट
माना हर वक्त मर्सिया हमने.

खैर चिड़ियों की मना, जंगल में
अभी देखा है बहेलिया हमनें.

बात जब क्रान्ति की उठी जो कहीं
बढ़ के अंगारा छू लिया हमने.

लूटता साहूकार, क्या कहिए?
उसके खातों की मार, क्या कहिए?

हर तरफ तो गुलों के मेले हैं
और खुशबू फरार, क्या कहिए?

काठ के घोड़े थे, खिलोने थे
क्यूं हुए हम सवार? क्या कहिए?

होता अक्सर जीतना निश्चित
जिन्दगी जाती हार, क्या कहिए?

गूँगे - बहरों का ये मौहल्ला है
दिल में बातें हजार, क्या कहिए?

खींचता हर शख्स की अब खाल दातादीन
कर रहा हर जिंदगी मुहाल दातादीन.

लोग जीते हैं किसी तालाब की मछली हुए
रह रहा बन कर वहां घड़ियाल दातादीन.

एक चिड़िया भी कभी बचकर निकल सकती नहीं
फेंकता है इस तरह के जाल दातादीन.

गांव है निर्धन, गरीबी भूख है चारों तरफ
बस अकेला खूब मालामाल दातादीन.

व्यर्थ होरी आस तू इससे लगाकर जी रहा
दे नहीं सकता ये रोटी - दाल दातादीन.

हो गयी शाम से सहर यारो!
खत्म होता नहीं सफर यारो!

आज तक इसलिये ही जिंदा हैं
रोज पीते हैं हम जहर यारो!

लोग आंखें ही बंद कर बैठे
अंधेरा भाया इस कदर यारो!

यहां हर शख्स है किले की तरह
पत्थरों का है ये शहर यारो!

दर्द सोचूं हूं आग हो जाए
सीना अपना है जख्मे-तर यारो!

जिंदगी बन गयी चुभन
रेत पर लिखा हुआ कथन.

लक्ष्य जाने खो गये कहां?
पांव को सालती थकन.

पिन सरीखा हो गया अस्तित्व
आदमी है गोया पिनकुशन.

होंठ पर है परकटी मुस्कान
अश्रुमय मिलते यहां नयन.

हर किसी में झूठ छल फरेब
आदमी का देखिए चलन.

△ संपर्क— ३/२९-सी, लक्ष्मीबाई मार्ग, अलीगढ़